दादी प्रकाशमणि

चीफ ऑफ ब्रह्माकुमारीज (1967-2007)

दादी प्रकाशमणि, जिन्हें 'दादी कुमारका' के नाम से भी जाना जाता है, उनका जन्म वर्ष 1922 में उत्तर भारतीय प्रांत हैदराबाद, सिंध (अब पाकिस्तान) में हुआ था। दादी के बचपन का नाम रामा था। उनकी, अपने पिता की तरह श्री कृष्ण के प्रति गहरी भक्ति और प्रेम था। दादी जब पहली बार ओम मंडली के संपर्क में आई, तब उनकी उम्र केवल 15 वर्ष थी। ओम मंडली, एक आध्यात्मिक सभा (सत्संग); जिसको दादा लेखराज (ब्रह्मा बाबा) ने निराकार भगवान शिव द्वारा दिये गये निर्देशों के आधार पर गठित किया था।

ओम मंडली से परिचय

दादी का ओम मंडली से पहला संपर्क दिवाली में स्कूल की छुट्टियों के दौरान हुआ। वह अपने पिता के अनुरोध पर सत्संग में गयी थी। ब्रह्मा बाबा को ईश्वरीय संस्करण (मुरली) का उपदेश देते हुए देखने के बाद, उन्होने श्री कृष्ण को एक सुंदर बगीचे में घूमते हुए देखा। इसके पश्चात, वह जब भी ब्रह्मा बाबा को देखती, तो उन्हें यही दर्शित होता। उन्हें तुरंत एहसास हुआ कि, ब्रह्मा बाबा ने जो दर्शन और उपदेश दिए थे, वे स्वयं निराकार भगवान शिव के ही थे, नाकि किसी शरीरधारी के। उन्होने वर्ष 1936 में 14 वर्ष की अल्पायु में, मानवीय जीवन की पीड़ाओं को समाप्त करने हेतु आध्यात्मिक उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। शुरुआत में, रामा को निराकार भगवान शिव से एक नया नाम ***"प्रकाशमणि"*** अर्थात ***'प्रकाश का गहना'*** मिला।

14 वर्षों की गहन तपस्या (भट्टी) के बाद, ओम मंडली मार्च 1950 में कराची, पाकिस्तान से माउंट आबू, भारत आ गईं। भारत आने के बाद, जैसे-जैसे सेवा बढ़ती गई, वैसे-वैसे केंद्रों की संख्या भी बढ़ती गई। दादी प्रकाशमणि ने भी सर्विस पर जाकर बहुत सेन्टर खोले। वह मुख्य रूप से मुंबई में रहीं। दादी 1965 तक मम्मा के मार्गदर्शन के अनुसार सेवाएं दिया करती थी। 1965 में मम्मा के अव्यक्त होने के बाद, दादी ने अतिरिक्त ज़िम्मेदारियाँ निभाने के लिए उनका कार्यभार लिया।

संगठन की प्रमुख

ब्रह्मा बाबा के 1969 में अव्यक्त फरिश्ता स्थिति को प्राप्त करने के बाद, **दादी प्रकाशमणि ने दीदी मनमोहिनी के साथ संगठन की प्रशासनिक जिम्मेदारी उठाई।** दादी और दीदी, दोनों ने मिलकर संगठन को बहुत सुचारु और कुशल तरीके से चलाया। उनमें एक-दूसरे के प्रति अत्यंत आदर और सम्मान था और वे अपने द्वारा किये गये प्रत्येक कार्य में एकता की भावना रखते थे। इसका व्यावहारिक परिणाम यह हुआ कि, बहुत ही कम समय में केन्द्रों और समर्पित राजयोग शिक्षकों की संख्या 5000 तक पहुँच गई।

दादी प्रकाशमणि की देखरेख में वर्ष 1986 में, ***"अंतर्राष्ट्रीय शांति वर्ष"*** के अन्तर्गत संयुक्त राष्ट्र (यूएन) द्वारा "मिलियन मिनट्स ऑफ़ पीस" अपील को मंजूरी दी गई थी।दादी प्रकाशमणि और ब्रह्माकुमारीज संगठन के निस्वार्थ और निरंतर योगदान के द्वारा, शांतिपूर्ण और कोओपरेटीव वातावरण को बढ़ावा देने की दिशा में, ब्रह्माकुमारीज संगठन को संयुक्त राष्ट्र द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन *(इंटरनेशनल एन.जी.ओ.)* के रूप में मान्यता प्रदान की गई थी। और साथ ही **दादी प्रकाशमणि को 1987 में संयुक्त राष्ट्र के द्वारा "शांति दूत" के पुरस्कार से सम्मानित** किया गया था।

असाधारण नेत्री

दादी प्रकाशमणि सभी महिलाओं के लिए अग्रणी थीं। जब समाज में महिलाओं को समान दर्जा प्राप्त नहीं था, वह ऐसे समय में **मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा संचालित और प्रबंधित धार्मिक संगठन की पहली महिला नेता थीं।** वह 1969 से 2007 तक ब्रह्माकुमारीज संस्था की प्रशासनिक प्रमुख रहीं। यह उनके असाधारण नेतृत्व का ही कमाल था कि, उनके जीवन और कार्यकाल के दौरान, **यह संगठन दुनिया भर में 5,000 से अधिक केंद्रों और उप-केंद्रों के साथ, एक देश से 120 देशों में फैल गया**।

रहस्यमय/ गूढ व्यक्तित्व

दादी का मतलब बड़ी बहन या कुछ जगह दादी *(पिता की माता)* होता है। वह ब्रह्माकुमारीज़ परिवार की कई पीढ़ियों के लिए दादी और दीदी दोनों थीं। दादी को सभी प्यार करते थे, वे बहुत प्यारी, सहनशील व्यक्तित्व वाली थीं और एक कुशल प्रशासक भी थीं। वह बहुत मेहनती थी और सभी प्रकार की यज्ञ सेवा करती थी, जैसे आध्यात्मिक सेमिनारों में भाग लेना, व्याख्यान देना और कभी-कभी आगंतुकों के लिए भोजन भी तैयार करना। ब्रह्मा बाबा समान दादी हर कार्य पहले स्वयं करके सिखाती थी| अंततः स्वाभाविक रूप से दादी ने सभी के मन में इस एक परिवार से जुड़े होने की भावना पैदा की। उनका मानना था कि "कोई भी गैर व अजनबी नहीं है, हर एक आध्यात्मिक पिता की संतान है और एक बड़े परिवार का हिस्सा है" और वह जहां भी गईं, उन्होंने यही माहौल बनाया। सभी को उनके प्रति स्वाभाविक लगाव महसूस होता था। **दादी एक स्नेहमयी माँ, मार्गदर्शक और प्रिय मित्र थीं**। आज भी **सभी प्यार और सम्मान से उन्हें 'बडी दादी'** बुलाते हैं|

दादी को निराकार परमात्मा शिव पर अत्यंत प्रेम और अटूट विश्वास था। उन्होंने एक ट्रस्टी होने के साथ-साथ अपनी सभी जिम्मेदारियाँ सटीकता और संपूर्ण निष्ठा से निभाईं। दादी कमल के तालाब में एक रत्नमणि के समान थीं। **वे स्वयं को हमेशा परमात्मा शिव के विश्व परिवर्तन प्रति श्रेष्ठ कार्यों हेतु निमित्त मात्र समझती थीं** और विश्व परिवर्तन की दिशा में मानवता को उनकी जन्मजात शक्तियों और गुणों की याद दिलाने के लिये निस्वार्थ भाव से सेवा करती थीं।

दादी प्रकाशमणि अपने जीवन के **हर कदम पर पूर्णतः सत्यता और पवित्रता की मशाल वाहक थीं**, जोकि संगठन का मूल और सत्य विजन है। वह अपने निस्वार्थ विचारों, शब्दों और कार्यों के माध्यम से, सभी में आंतरिक शक्तियों और गुणों का आह्वान करके, मानवता को बदलने के लिए **एक ट्रस्टी, विनम्रता की प्रतिमूर्ति और बेहतर दुनिया की निर्मात्री होने के सिद्धांतों** पर चलती रहीं।

परंपरा/ भविष्य निधि

हमारी प्यारी और स्नेहमयी बडी दादी ने 25 अगस्त, 2007 को अपना नश्वर शरीर त्याग कर फरिश्ता स्थिति को प्राप्त किया। उनके सम्मान में, **उनकी पुण्य तिथी को ब्रह्माकुमारीज इंटरनेशनल हाफ मैराथन के माध्यम से "यूनिवर्सल ब्रदरहुड डे" के रूप में मनाया जाता है।** अंतर्राष्ट्रीय हाफ मैराथन का उद्देश्य, सभी के बीच एकता और अखंडता का संदेश फैलाना है। "दादी प्रकाशमणि माउंट आबू इंटरनेशनल हाफ मैराथन" को *एसोसिएशन ऑफ इंटरनेशनल मैराथन एंड डिस्टेंस रन्स* (AIMS) द्वारा "इंटरनेशनल मेजरमेंट सर्टिफिकेट" से प्रमाणित किया गया है। AIMS दुनिया के 450 देशों में से; 120 से अधिक देशों का लीडिंग रेसेस पर आधारित संगठन है।

दुनिया में ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो जाने के बाद भी दूसरों को प्रेरित करते रहते हैं। **हमारी प्यारी दादी प्रकाशमणिजी ऐसे ही रत्नों में से एक हैं जो आज भी अपनी मधुर स्मृतियों के माध्यम से अमर हैं। दादी का स्लोगन था- "सदा निर्मल और निर्माणचित"|**